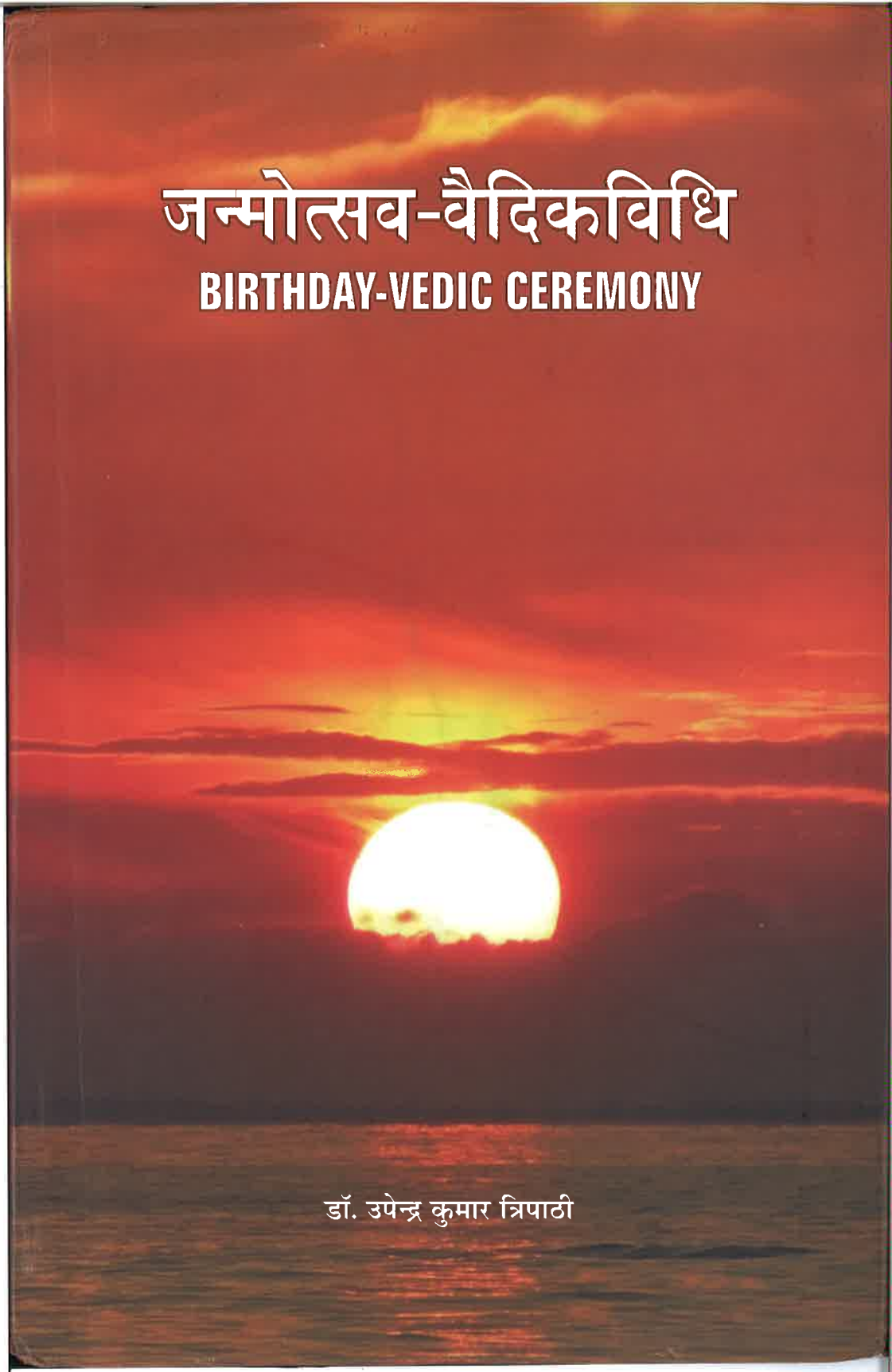

जन्मोत्सव-वैदिकविधि

BIRTHDAY-VEDIC CEREMONY

डॉ. उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी

पुरोवाक्

भारतीय चिन्तन में जन्मोत्सव मनाने की परम्परा प्राचीनकाल से ही रही है। इसका वैदिक प्रमाण प्रस्तुत पुस्तक ही है। महाभारत में अर्जुन के जन्मोत्सव के दिन ही पाण्डु का निधन हुआ था। इसका उल्लेख महाभारत में प्राप्त होता है। इसी प्रकार से उत्तर रामचरितम में भी लव एवं कुश की १२वीं वर्षगॉठ (जन्मोत्सव) मनाने का उल्लेख है। पुराणों में जितने भी पर्व-उत्सव है, किसी न किसी देवता एवं ऋषियों के जन्मदिवस अथवा प्राकट्य दिवस के अवसर पर ही मनाये जाते हैं। इन जयन्तियों को मनाने से हमें विशेष रूप से अध्यात्मिक ऊर्जा प्राप्त होती है, साथ ही सामाजिक समरसता, सद्भावना द्वारा एक स्वस्थ समाज का निर्माण होता है। इसी परम्परा का अनुकरण कर हम महापुरुषों के जन्मदिन को जन्मजयन्ती के रूप में मनाते हैं। इन जयन्तियों को मनाने के पीछे जो चिन्तन है वह मेरी समझ से हम उनके सम्पूर्ण व्यक्तित्व का चिन्तन तथा मनन करते हैं तथा समाज की नई पीढ़ी में प्रेरणा जागृत करते हैं और वह प्रेरणा हमें एक सफल जीवन बनाने में सहायक सिद्ध होती है। जैसा कि कहा गया है **''महाजनो येन गतः स पन्थाः''**। श्रेष्ठ महापुरुषों के बताए हुए रास्ते, उनका आचरण, उनका जीवन दर्शन हम सभी के लिए पथ प्रदर्शक होता है। ये महापुरुष किसी भी वर्ग, जाति, सम्प्रदाय, मजहब आदि के हो, हम सभी इनके जयन्तियों से उनके आदर्श एवं उनके मूल्यों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं। इस प्रकार से हम कह सकते हैं कि जन्मोत्सव या जयन्ती मनाने की परम्परा भारतीय परम्परा की अविच्छिन्न परम्परा रही है। वैदिक ऋषियों ने मानव को पूर्ण मानव बनाने के लिए अनेक वैज्ञानिक विधियों को बताया, जिनको संपादित कर हम अपने अंदर मानवीय मूल्यों को विकसित करते हैं, उन्हीं विधियों में जन्मोत्सव विधि भी एक है।

मानव जीवन में प्रत्येक मानव त्रिगुणात्मक प्रकृति (सत्व, रजस् एवं तमस्) तथा दो प्रकार की वृत्तियों (दैविक एवं आसुरी) को सदा धारण किये हुए है। दो प्रकार की जो वृत्तियाँ हैं, वे इन त्रिगुणात्मक प्रकृति के द्वारा प्रकृति की न्यूनता एवं अधिकता पर आधारित रहती हैं। सात्विक की अधिकता होने पर दैविक भाव उत्पन्न होते हैं तथा तमोगुण की अधिकता से आसुरी प्रवृत्ति उत्पन्न होती है। रजोगुण लगभग दोनों में उपस्थित रहता है, ऐसा शास्त्रों में बताया गया है। जैसा कि सब जानते हैं कि **''वेदे सर्वं प्रतिष्ठितम्''** के अनुसार वेद में समस्त ज्ञान विज्ञान प्रतिष्ठित है। इसमें तीन काण्ड होते हैं- कर्मकाण्ड, उपासना तथा ज्ञानकाण्ड। इन कर्मकाण्डों के द्वारा मनुष्य के चित्त की स्थूल एवं सूक्ष्म वृत्तियों का शोधन होता है, क्योंकि चित्त की वृत्तियों पर अनेक जन्मों के कर्मफल का प्रभाव विद्यमान रहता है। उनका शोधन वैदिक अनुष्ठानादि (Rituals) को करने से होता है, ऐसी ऋषियों की मान्यता है। इसलिए कार्यविशेष के क्रम में हमारे यहाँ वैदिक अनुष्ठान बतलाए गए हैं, जिन अनुष्ठानों को सम्पन्न कर हम ऊर्जा का संचयन करते हैं। इन आनुष्ठानिक कर्मकाण्डों के प्रतीकात्मक स्वरूप हमारे सम्पूर्ण प्रकृति, पर्यावरण तथा ब्रह्माण्ड से है, जो हमें सामान्य रूप से दिखता नहीं है, परन्तु उनके प्रतीकात्मक विधियों के मनन एवं चिन्तन करने पर उनके रहस्य हमें प्राप्त होते हैं। इस जन्मोत्सव विधि को हम वर्धापन विधि भी कहते हैं। महामना पण्डित मदन मोहन मालवीय जी द्वारा संस्थापित एवं प्रथम सम्पादित **''विश्व पञ्चाङ्ग''** में इसका उल्लेख किया गया है। मैने उन विधियों को स्वरूप प्रदान करते हुए यथाज्ञान विश्लेषित करने का प्रयास किया है, जिससे सामान्यजन भी प्रेरित हो सकें। आज प्रत्येक परिवार में जन्मोत्सव मनाने की परम्परा चलने लगी है, परन्तु हम पाश्चात्य परम्परा के अंधे दौड़ में केक काटते हुए ज्ञान ज्योति

का प्रतीक दीप को जलाने के बजाय बुझाते हैं। हमारी समझ से यहाँ पर जितने वर्ष के हम होते हैं, उतने दीपक हमें जलाने चाहिए। हमें अपनी संस्कृति के अनुरूप उस दिन ऋषिप्रणीत दिनचर्या का पालन करना तथा जन्मोत्सव विधि के अनुसार वैदिक यज्ञ करना चाहिए। यदि हम वैदिक अनुष्ठान आदि कर्म इस आपाधापी दिनचर्या में नहीं कर पा रहे हैं तो उनके लिए भी मैंने शास्त्रोक्त क्रम के अनुसार उस दिन दिनचर्या को धारण करने की विधि तथा अपने पुकारनाम के अनुसार अथवा जन्म नक्षत्र के अनुसार पूज्य वृक्षों एवं पुष्प के पौधों में से कम से कम एक का वृक्षारोपण करने की विधि को दिग्दर्शित किया है। दिनचर्या में करावलोकन करना, पृथ्वी माता को प्रणाम करना, अपने बड़े-बुजुर्गों एवं श्रेष्ठजनों से आशीर्वाद प्राप्त करना, "Happy Birthday to You" के स्थान पर संस्कृत मंगलगीत के पाठ की विधि को भी दिग्दर्शित करते हुए वैदिक विधि से आयुवर्द्धक मंत्रपाठों के माध्यम से आयु की वृद्धि की कामना के साथ ही घर के वातावरण एवं जीवन में एक सकारात्मक ऊर्जा को धारण करने की विधि प्रस्तुत पुस्तक में बतलायी गयी है।

आज के इस भौतिकवादी युग में हम अपंने ज्ञानपरक संस्कृति से दूर होते जा रहे हैं। इसके लिए प्रस्तुत ग्रन्थ राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने एवं अपनी संस्कृति के अनुरूप जन्मदिन मनाने के लिए प्रेरित करता है। इसके माध्यम से अपनी संस्कृति को आत्मसात् करते हुए अपनी गौरवमयी परम्परा को अक्षुण्ण बनाए रखने में हम समर्थ हो सकेंगे।

डॉ० उपेन्द्र कुमार त्रिपाठी